





भाग १

महाराणा प्रताप राजस्तान में सबसे अधिक पूजनीय है। आप बहादुर देशभक्त तथा उदार हिंदू क्षत्रिय थे।

₹ 50

हल्दी घाटी को समर्पित रण

मो. ९८८१९०१०४९ संस्करण - जून २०२१ . मूल्य ₹ ५०

कृपया ध्यान दें: ब्रिटिश उच्चारण के प्रभाव को कम करने के लिए भारतीय शैली के अनुसार नाम लिखे गए हैं।



- विश्व में, 'बहुत कम के सामने बहुत जादा' द्वारा हुए समर में हाथी की लड़ाई का एक विशेष स्थान है।
- इतिहासकारों ने इस अभियान पर कई टिप्पणियां की हैं। ' लड़ाई जीती भी तथा हार भी!
- चेतक - युद्ध अश्व के बलिदान से महाराणा प्रताप की शौर्यगाथा , स्मृति और कहानियों के माध्यम से हमेशा ताजा रहेगी।







वर्तमान थलसेना, वायु सेना और नौसेना के



तज्ज्ञ अधिकारियों की प्रस्तुती

मेवाड़ राज्य कहां है? हल्दी घाटी आजकल कैसे दिखाई देती है?





Ki Bhagal

Chetak Smarak H

Actual narrow Pass of Haldi

मेवाड़ संस्थान का राजचिन्ह

बोधवाक्य - जो दृढता से धर्म की रक्षा करते हैं; उनका रक्षण ईश्वरीय शक्ती करती हैं।



इस प्रस्तुति का उद्देश्य क्या है ?

- महाराणा प्रताप की लड़ाई में क्या गलतियां हुई, यह दिखाने का कोई इरादा नहीं है।
- उद्धेश्य एक सामान्य विचार प्रस्तूत करना है कि ऊन दिनों लड़ाईयां कैसे लड़ी जाती थी।
- यदि आज के सैन्य कमांडरों को रणनीतिक दृष्टिकोण से युद्ध के आदेश मिलते हैं, तो वे कैसे लड़ेंगे?
- युद्ध के विभिन्न पहलुओं का समालोचनात्मक विश्लेषण वे कैसे करेंगे? रसद यातायात की योजना कैसे बनाएंगे? युद्ध जीतने के लक्ष्य को प्राप्त करते हुए बदलती परिस्थितियों के अनुसार योजनाओं में कैसे सुधार करेंगे?आदि बातों का समावेश किया गया है।
- आंखोंपर चष्मा नही, कलाईपर घडी नहीं, आग लगाने के लिए माचिस या लायटर नहीं जैसी उस समय की मर्यादाएं ध्यान में रखते हुए योजना को कैसे लागू किया गया था, इस अवधारणा पर आधारित है।

क्या यह दावा है कि "युद्ध उस समय हुआ जैसा यहां प्रस्तुत किया गया है"?

- ❖ यह लड़ाई रचनात्मक स्वतंत्रता पर आधारित है।
- ❖ इस बात का कोई दावा नहीं है कि लड़ाई वास्तव में इसी तरह हुई थी। ऐतिहासिक विवरण, तथ्य और साक्ष्य के टुकड़े वर्तमान में कई मान्यता प्राप्त और व्यापक स्थलों के इतिहास में उपलब्ध नहीं हैं।
- ❖ इसलिए, वर्तमान में मान्यता प्राप्त जानकारी के आधार पर घटनाओं की स्थापना की गई है।
- ❖ ऐसे में यह काल्पनिक परिदृश्य जीवन की घटनाओं के अतीत और भविष्य के व्यवहार, साहस, वीरता का प्रदर्शन, सैन्य प्रबंधन कौशल और उपलब्ध संसाधनों और हथियारों के उपयोग को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

डिसक्लेमर

- इस प्रस्तुति में उपयोग किए जाने वाले फोटो, हस्तशिल्प, विभिन्न ध्वनियों, वीडियो क्लिप, व्यक्तित्व और चेहरे के भाव प्रतिनिधि के रूप में उपयोग किए जाते हैं। उनका दुरुपयोग करने का हमारा हेतु नहीं है।
- तथापि, यदि किसी कारण से कॉपीराइट का उल्लंघन हुआ है, तो उन सामग्रियों को छोड़ दिया जाएगा।



हल्दीघाटी अभियान से पहले राजनितिक स्थितियां क्या थी? १

- ❖ इस सवाल के जवाब में सेना के अधिकारी कहते हैं-
- ❖ १. हम इतिहासकार नहीं हैं। लेकिन सामान्य जानकारी से यह कहा जा सकता है कि...
- ❖ २. राजा अकबर (उम्र ३२) मेवाड़ साम्राज्य को मुगल शासन के अधीन लाना चाहता था। शांति वार्ता के चार प्रयास विफल रहे थे।
- ❖ ३. वर्ष १५७६ में, आमेर (जयपुर) राज्य (आयु २७) के राजकुमार - कुंवर मान सिंह ने अभियान का नेतृत्व किया।
- ❖ ४. योजना के अनुसार, महाराणा प्रताप (३७) को पकड़ लिया जाना था या उनकी हत्या कर दी गई थी और उनके गोगुन्दा और कुंभलगढ़ किले को अपने कब्जे में ले लिया गया था। अकबर राजपूतों के प्रभुत्व को समाप्त करना चाहता था। और मुगल सत्ता के व्यापार मार्ग पर कर राजस्व अर्जित करें।



हल्दीघाटी अभियान के बाद राजनितिक स्थितियां क्या थी? २

- ५. राणा प्रताप युद्ध में घायल हो गए, लेकिन पकड़े नहीं जा सके। इस प्रकार, अकबर की ओर से अभियान विफल हो गया। इस वजह से मान सिंह को अगले २ साल तक दरबार में नहीं आने दिया गया!
- ६. हाथियों का इस्तेमाल युद्धक टैंक के रूप में किया गया। हाथी से चेतक घायल हो गया और राणा प्रताप को हल्दी दर्रे (घाटी) के पहाड़ी दर्रे में बिखेरना पड़ा।
- ७.बाद में १५९७ में महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद, १६१५ में मेवाड़ साम्राज्य और मुगलों के बीच एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए गए। जिस में मेवाड़ राजवंश की महिलाओं का धर्मपरावर्तित नहीं किया जाएगा;
- ५ हजार सिपाहियों के मनसब से सम्मान होगा, लेकिन मेवाड़ के शासक दरबार आदि में वे उपस्थित नहीं होंगे आदि कलम थे।



राजा अकबर तथा कुँवर मानसिंह के बीच सोच विचार



- अकबर हर साल अजमेर में ख्वाजा मोईउद्दीन चिश्ती की दरगाह पर चादर चढ़ाने जाया करता थे। १५७५ में उन्होंने कुं. मानसिंह को बुलवाया।
- महाराणा प्रताप से चार बार वार्ता विफल हो गई थी। मेवाड़ पर युद्ध छेड़ने और इसे मुगलों के स्थायी नियंत्रण में लाने का निर्णय लिया गया। महाराणा प्रताप के राज्य का कांटा हटाने का फैसला किया।
- तय किया गया कि कुँ. मानसिंह अपनी राजपुतों की ६,००० सेना आमेर से तथा मुगलों के १०,००० सैनिकों को फतेपुर से मांडलगढ़ पर इकट्ठा करेंगे। कुँ. मानसिंह को सेना का नेतृत्व दिया।
- कुँ. मानसिंह को जंग जीतने के बाद अकबर के दरबार में उंचा पद देकर सन्मानित किया जाना था।



अकबर ने इस अभियान में कैसे भाग लिया? -१

- अकबर ने योजना बनाई और कुँवर मानसिंह को पूर्णता सौंप दी। वह इस प्रकार से थी...
- लड़ाई हल्दी घाटी के पास बनास नदी के किनारे एक संकरे, समतल क्षेत्र में लड़ी जानी चाहिए।
- मुगल सेना पहले तोपखाने का इस्तेमाल करेगी। फिर हाथी और घुड़सवार सेना का उपयोग किया जाएगा।
- मेवाड़ की सेना को चारों तरफ से घेर कर आत्मसमर्पण करने को विवश होना पड़े।
- मेवाड़ की सेना के गोगुन्दा किले और कुम्भलगढ़ के वापसी रास्तों को बंद करना चाहिए।
- बाद में दोनों गढ़ जीत कर विजयी होकर लौटना चाहिए।



अकबर ने इस अभियान में कैसे भाग लिया? - २

❖ अकबर ने इस अभियान में अपने चुने हुए प्रमुखों और उनकी सेना को मानसिंह के नेतृत्व में दिया।

❖ उसपर नियंत्रण रखने के मुस्लिम सरदारों को आदेश दिए थे।

❖ एक तरह से जीत की पूरी व्यवस्था की।

❖ यदि किसी कारणवश युद्ध प्रताप की ओर झुक जाता है या युद्ध के दौरान कुँवर मानसिंह को पकड़ लिया या मार दिया जाता है तो सेना प्रमुख का नेतृत्व मुगल सेना के वरिष्ठ सरदार करेंगे।

❖ आदि बातें अकबर ने ध्यान रखी थी।

मेवाड़ राज्य

- प्रताप सिंह
- चरण जयसिंह
- चरण कैसा सिंह
- दोडिया भीम सिंह
- रामदास राठौर
- राम साह तंवर
- हकीम खान सूर
- भामा शाह
- ताराचंद
- बिदा झाला
- राव पूंजा भील

मुगल साम्राज्य

- कुँ. मान सिंह
- सैय्यद अहमद खान बरहा
- सैय्यद हाशिम बरहा
- जगन्नाथ कछवा
- घियास-उद-दिन अली आसफ खान
- माधोसिंह कछवा
- मुल्ला काज़ी ख़ान
- राव लुणकरन
- मिहत्तर खान

दोनों पक्षों के प्रमुख सरदार



इस युद्ध में कुँवर मानसिंह के उद्देश्य क्या थे?



- १. राणा प्रताप को जीवित अकबर के सामने प्रस्तुत करना। यदि नहीं, तो उसे व्यक्तिगत रूप से मार देना।
- २. राणा प्रताप के पक्ष से लड़ने वाले मुख्य सरदारों के प्रति शत्रुता को तुरंत रोकना। उन्हें स्वेच्छा से मुगल सेना में शामिल होने की अनुमति देना।
- 3. गोगुन्दा क़िले का कब्जा करनाके उस पर अधिकार हासिल करना।
- ४. अकबर के दरबार में उंची प्रतिष्ठा और सम्मान हासिल करना।



मुगल सेना की रणनीति भाग १

- कुँ. मानसिंह युद्ध की रणनीति के रूप में मोलेला की पहाड़ी से मेवाड़ राज्य की सीमा पर पहुंचनेपर उन्होंने बनास नदी के किनारे को पार करना होगा और गोगुन्दा के रास्ते में किले की ओर हल्दी घाटी को पार करना होगा।
- राणा प्रताप अपनी सेना के साथ मांडलगढ़ पर हमला कर सकते हैं। जासूसों से मिली जानकारी के आधार पर राणा प्रताप मुगलों को हल्दी दर्रे पर रोकने की कोशिश करेंगे ताकि वह बिना किसी लड़ाई के गोगुड़ा किले को बचा सकें।
- यदि उन्हे खमनौर में ही लडा सके तो पहाड़ों की अपेक्षा नदी के किनारे रणभूमि बनाना अधिक सुविधाजनक होगा।हमले को विफल करने के लिए मेवाड़ की सेना को तितर-बितर करना होगा।
- सभी पक्षों से संपर्क में रहने के लिए कुँ. मान सिंह केंद्र में होंगे। युद्ध की आवश्यकता के अनुसार सैनिकों की चाल का आदेश देंगे।



मुगल सेना की रणनीति भाग २

- ❖ शुरुवाती भील सेना के हमले में तीरों का प्रतिकार कर पीछे हटाना पडेगा।
- ❖ उन्हें डराने के लिए तोपखाने का इस्तेमाल करना चाहिए।
- ❖ कुँ. मानसिंह जीत की संभावना पर नजर रखने के लिए हाथियों को युद्ध में लाने तथा युद्ध के अलग अलग मोर्चोंपर हो रही गतिविधियो पर निगरानी करते रहेंगे।
- ❖ जब प्रताप समरांगण में प्रकट होंगे तब कुँवर मानसिंह दूरी का फायदा उठाने के लिए युद्ध में शामिल हो जाएंगे।



मुगल सेना की रणनीति भाग ३

- राणा प्रताप का ध्यान आकर्षित करने के लिए, तीरंदाजी पलटन दूर से भाले फेंकती रहेंगी। उनके तीर खत्म होने पर पीछे की टुकड़ी उनके जगह लेकर या बगल से पहली टुकडी की जगह ले सकेंगे और दूर से ही राणा प्रताप को जखमी कर पकड़ सकेंगे।
- कोई मुगल सैनिक शत्रु के बाण से घायल हो जाता है, तो मारे जाने से बचने के लिए उसे हथियार फेंककर शरण जाना होगा।
- घायल घोड़ों और सवारों को घोड़े से उतारकर सुरक्षित स्थान पर ले जाना होगा। आदि कामों पर अलग टुकडियां तैनात की गई जाएंगी।
- यदि मुगल सेना की हार हो रही हो तो हाथियों को युद्ध क्षेत्र के लिए तैयार रखना होगा। ढोल, तुरही, ध्वजवाहक और युद्ध के अन्य वाद्य बजाकर हाथियों के आने के संकेत देकर लडते हुए सैनिकों को जोरदार इशारे कर युद्ध का मैदान खाली कराने के आदेश देने होंगे।



मुगल सेना की रणनीति भाग ४

- हाथी मैदान में आने पर, अपने ही सैनिकों को रौंदा नहीं जाना चाहिए। उन्हें हाथी के दांत पर चढाई हुई तलवार की पहुंच से दूर जाना होगा।
- याद रखें कि क्रोधित हाथी महावतों की भी नहीं सुनते। हाथियों को दुश्मन सेना के अंदर मात्र महावतों द्वारा काबू किया जाता है।
- इसलिए हाथी को अपने सैनिकों द्वारा उसके के चारों ओर घेरा बनाकर रक्षा करनी होगी।
- दुश्मन हाथियों के साथ सीधे टकराव से बचने के लिए उन्हें दूर रखा जाना चाहिए। तलवारों के साथ घोड़े पर सवार सैनिकों का सामना कमान और तीर सवारों की कंपनी द्वारा किया जाना चाहिए।



मुगल सेना की रणनीति भाग ५

- दुश्मन सैनिकों को दूर से परेशान करना होगा, खुद को छिपने के लिए आसपास की झाड़ियों और पहाड़ी, चढ़ाई की जगाहें पहचाननी होगा।
- बचना असंभव हो तो जहां हो वहीं से ही लड़ते रहना होगा। पकड़े जाने पर भागने की कोशिश करनी होगी। जब घोड़े किसी चीज से विचलित होते हैं, तो सवार नीचे गिर जाता है। ध्यान रहे कि घोडों के पैर सिर पर न आ पाएं। भाग ते जनावरों के सामने मत जाओ।
- मौत से बचने के लिए हथियार नीचे रखो। बाहों को फैलाकर, आत्मसमर्पण कर दो। जोर-जोर से चिल्लाकर, रणसिंग बजाकर, अन्य वाद्ययंत्रों या झंडों से मदद मांगने की कोशिश करो। हमेशा कहीं से भी आने वाली चेतावनियों पर ध्यान दो। अपनी अपनी रणगर्जना करते रहो।
- यदि सामने वाला सैनिक वर्दी में मुसलमान नहीं है, तो यह सुनिश्चित करने के लिए युद्ध का नारा दें ताकि कौन दुश्मन है, कौन मित्र है यह समझ आएं। अपने-अपने प्रमुखों के नाम पुकारो। नहीं तो अपनी तरफ से लड़ रहे सिपाही के हाथों मारे जाने की संभावना से बचो।



मेवाड़ सेना की युद्धनीति क्या थी? भाग १

- मुगल सेना को बनास नदी पार करने और मेवाड़ राज्य में प्रवेश करने के प्रयास को हर हाल में रोकना होगा।
- गोगुन्दा किले पर मुगलों का कब्जा नहीं करने देना। इसलिए उन्हें हल्दीघाटी के सँकरे मार्गपर रोक कर दोनों तरफ से बंद कर पार मानने पर बाध्य करना।
- पीछे हटने वाली मुगल सेना को आत्मसमर्पण करने पर बाध्य कराना।
- कुँ. मानसिंह को युद्ध में हराकर मेवाड़ राज्य को मुगल सत्ता में शामिल करने का सपना पूरी तरह से चूर करना।



मेवाड़ सेना की युद्धनीति क्या थी? भाग २

- युद्ध के परिणाम को देखकर, हाथियों को युद्ध में डाल देना तथा मुगल सेना को तिथरबिथर कर भगा देना होगा।
- महाराणा अपने हाथी से युद्ध का निरीक्षण करेंगे और निर्देश देंगे। मुगलों की सेना में तैनात तोपखाना तथा उसमें काम आनेवाला गोलाबारूद, असला उध्वस्त करना या कमसे कम नादुरूस्त कराना होगा।
- ध्वजपाल, हलकारे, हथियारों को पहुंचाने वाले दस्तों को प्राथमिकता देकर युद्धरत सैनिकों का मनोबल ऊंचा रखने में मदद करना होगा।
- कुँ. मानसिंह और उसके सरदारों को बंदी बनाना तथा उन्हें अपनी मांगों, शर्तों पर मनवाने के बाध्य करना होगा।



मेवाड़ सेना की युद्धनीति क्या थी? भाग ३

- ❖ राजपरिवार, बुजुर्ग, राजकोष, अनाज की आपूर्ति को सुरक्षित रूप से कुम्भलगढ़ पहुंचाना होगा।
- ❖ सेना को खमनौर की पहाड़ियों में इकट्ठा होना होगा।
- ❖ तोपखाने को बनास नदी के पास रहकर मुगल सेना को आगे बढ़ने से रोकना होगा।
- ❖ तीरंदाज को भील सेना के अलग-अलग टीलों में छिपकर तेल से जलते हुए तीरों और जहरीले पानी में डूबे कई छोटे-बड़े लंबाई के बाणों की पोटली बनानी होगी। उनका काम मुगलों को खदेड़ना होगा।
- ❖ घुड़सवार सेना ने मुगल पैदल सेना को घेरना होगा और हथियारों और रसद की आपूर्ति में बंद करनी होगी। तोपखाने की आड़ में पैदल सेना का लगातार आक्रमण मुगलों पर जारी करना होगा।



भविष्य की लड़ाई के लिए मेवाड़ सेना की योजना

- ❖ मेवाड़ एक अकेला राज्य था, जिसने मुगल शासन के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया था।
- ❖ कुछ बुजुर्ग सरदारों की सेना जिन्होंने 1572 में राजकुमार प्रताप को राजा बनाया और भील बटालियन महाराणा के प्रति निष्ठावान थी।
- ❖ कई राजपूत सरदार अपने लाभ के अनुसार निष्ठाएं बदलते थे।
- ❖ उसके संसाधन सीमित थे। पिता राणा उदयसिंह उनके किलों से वंचित थे।
- ❖ इस प्रकार, महाराणा के लिए, यह करो या मरो की स्थिति थी।

कुँवर मानसिंह द्वारा प्रस्थान का मुहुर्त

- कुँवर मानसिंह ने आमेर किले से (वर्तमान में जयपुर किले के रूप में जो जाना जाता है) 3 अप्रैल १५७६ प्रयाण किया। याने, विक्रम संवत १६33, वैशाख कृष्ण दशमी, शनिवार को सर्वार्थ सिद्धि योग देखकर चल पडे। (जयपूर घराने में शुभ मुहूर्त देखने का प्रचलन था। सर्वसिद्धीयोग उस दिन को शुभ योग दर्शाता है।)



10, Vaishakha
Krishna Paksha, Dashami
1633 Tarana, Vikrama Samvata
Jaipur, India

03
April 1576
Saturday

Sarvartha Siddhi Yoga, Bhadra

- दल में लगभग 3,000 के पैदल सैनिक और घुड़सवारी करने वाले १,000 सैनिक शामिल थे। सहायक कर्मचारियों के साथ, हाथी, घोड़े, जैसे युद्ध के जानवर तथा माल ढोने वाले ऊँट, बैल, गधे आदि जानवर थे।

राजकुँवर मानसिंह आमेर किले से चले टोंक की ओर



राजकुँवर मानसिंह हाथियों पर निकल पडे आमेर किले से (जयपुर) मांडलगढ़ की ओर



हाथियों का काफ़िला नदी से जाता हुआ प्रातिनिधिक चित्र

जयपुर से टौंक दूरी 100 कि मी

Jaipur
जयपुर
Click & hold to compare
21
Bagru
बगरू
52
Chaksu
चाकसू
Phagi
फागी
23
Vanasthali
वनस्थली
52
Jhirana
झिरना
Tonk



कुँ. मानसिंह की सेना टौंक से मांडलगढ़ १४० किमी

ढोंक से मांडलगढ़ दूरी १४० किमी बनास तट के साथ साथ

ढोंक - बांबोर

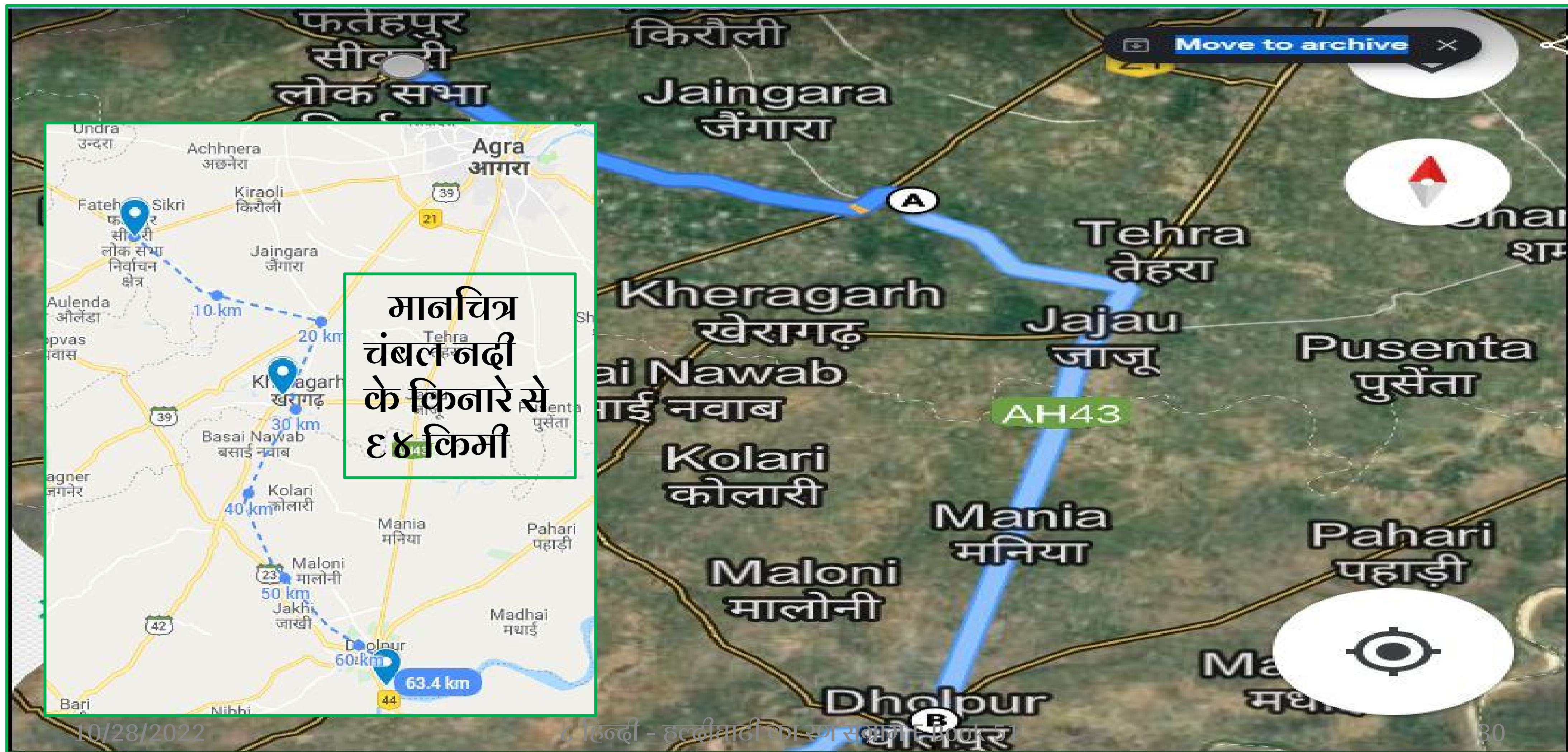
मांडलगढ

अकबर की मुगल सेना राजधानी फतेपुर से निकली

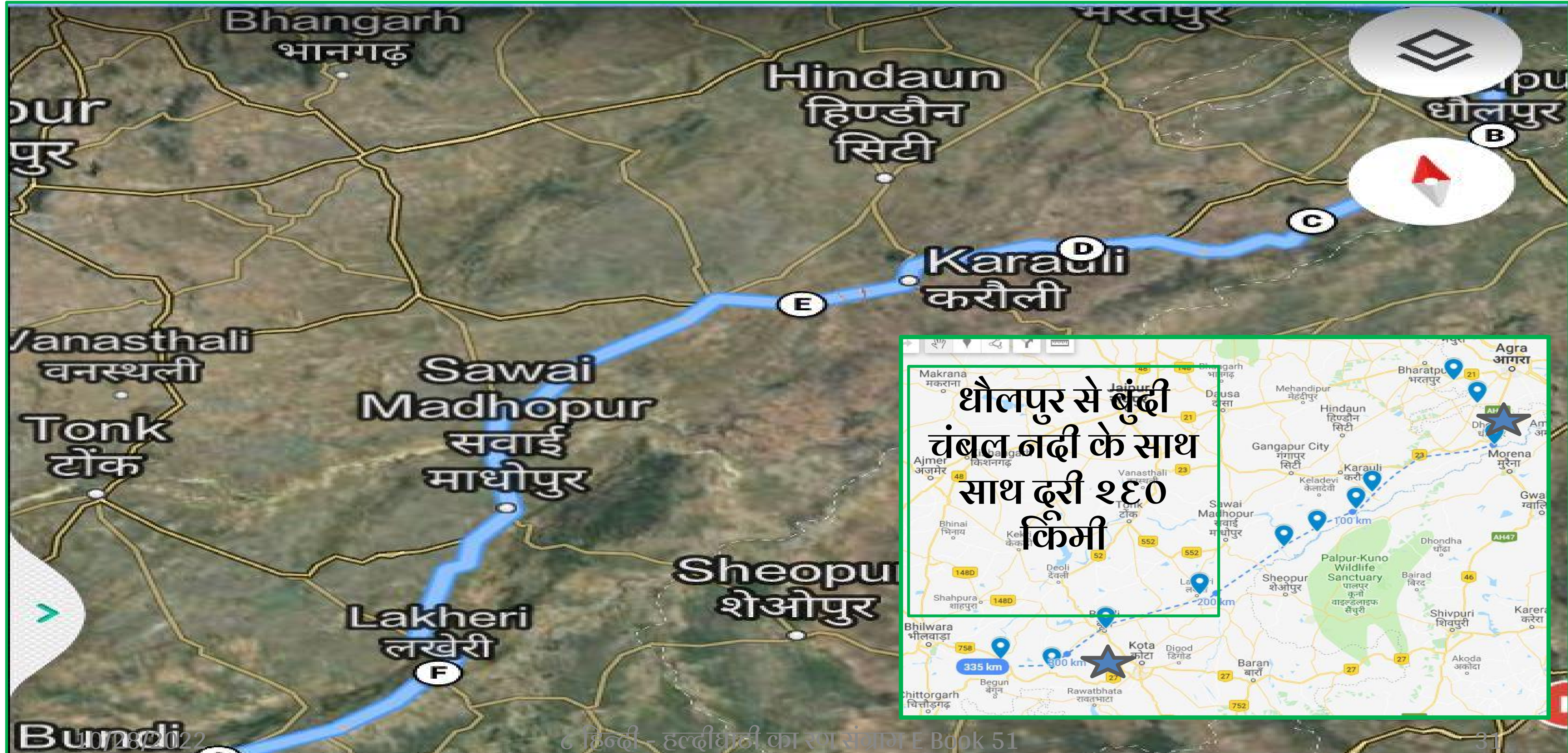


Buland (Massive) Gate बुलंद दरवाजा - दफ्तरखाना- Offices

मुगल सेना फतेपुर-सीकरी से धौलपुर दूरी ६४ किमी



मुगल सेना धौलपुर से बुंदी तक २६० किमी



मुगल सेना बुंदी से मांडलगढ तक ८२ किमी



कुँ. मानसिंह तथा अन्य मुगल सेना मांडलगढ़ जमा हुई



मुगलों की इकट्ठा सेना मांडलगढ़ से मोलेला की तरफ निकली १६२ किमी



* Madalgad to Moi - Barlias - Hamirgad - Rashmi - Bhimgad - Kuraaj - Nogama -... Zoom:

मोलेला पहाड़ी के पीछे मुगल सेना का जमावड़ा

प्रेक्षण चौकी

मुगलसेना १० जून, १५७६ से अगले आदेश का इंतजार कर रही थी

पहाड़ी पर सैन्य उपकरण, शस्त्रागार, बंदूकें, गोला-बारूद, वरिष्ठ सरदारों के तंबू रखे गए थे।

मोलेला पहाडी अब मां खेड़ा मंदिर के नाम से जानी जाती है



❖ मोलेला हिलटॉप पहुंचने पर, मानसिंह ने सोचा कि वे उस समय मेवाड साम्राज्य की बनास नदी की सीमा को पार करने के लिए तैयार हैं।

❖ खूफिया जानकारीके आधार पर राणाप्रताप मुगलों को रोकने की कोशिश करेंगे ताकि वे बिना अंदर जाए लड़ाई के जीत सकते हैं।

❖ हमलों की तीन परतों को पार करने के लिए मुगल सेनाओं को बिखेर दिया गया था। बाएं, दाएं और केंद्र। वे कमजोर या पस्त बलों को मजबूत करने के लिए आपस में जुड़े हुए थे।

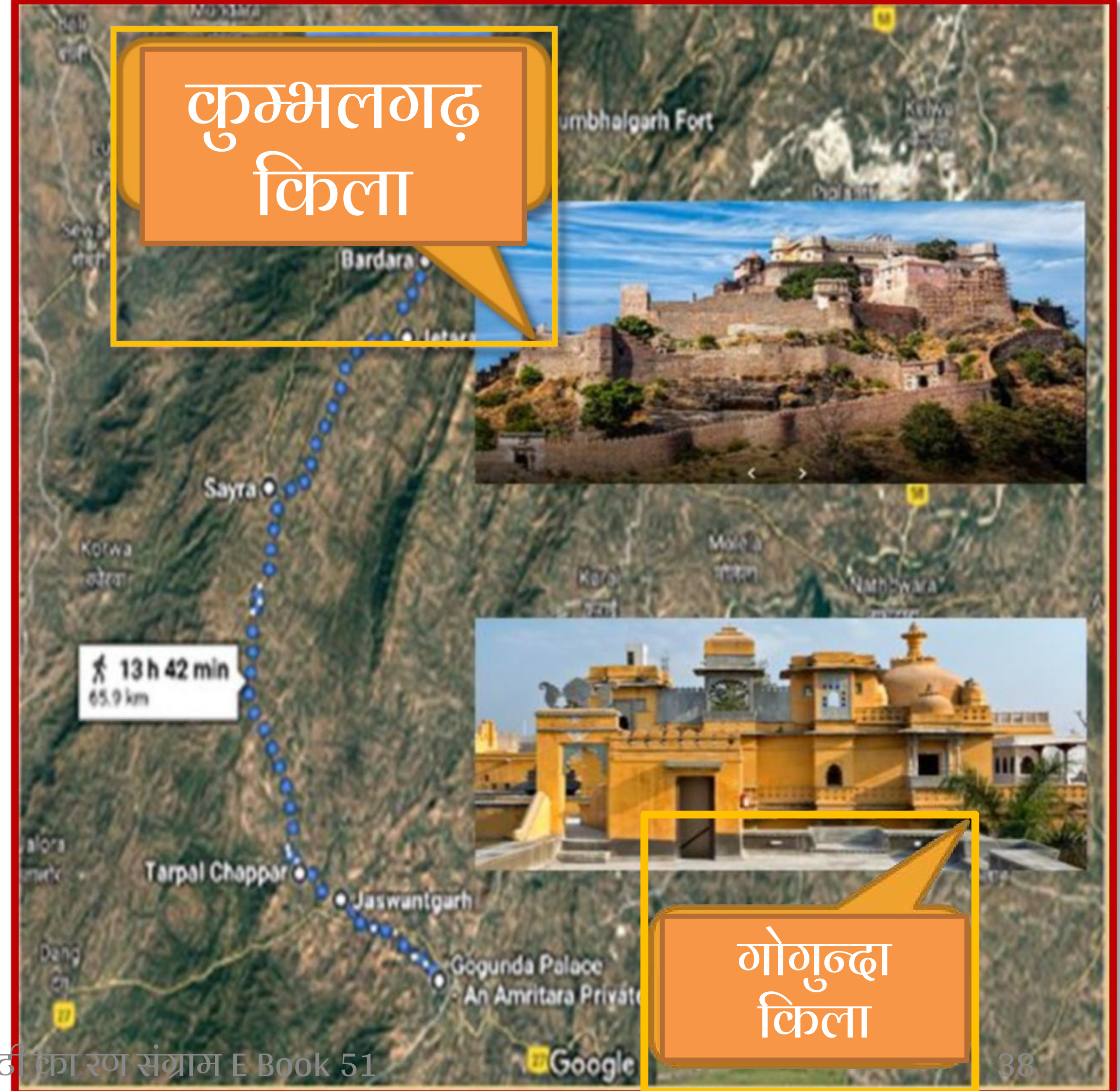
❖ भील सेनाओं से प्रारंभिक आक्रमण तीरों का मुकाबला करने के लिए, उन्होंने उन्हें डराने के लिए तोपखाने रखे थे।



मोलेला के टीले पर आजकल माता खेडादेवी का मंदिर है

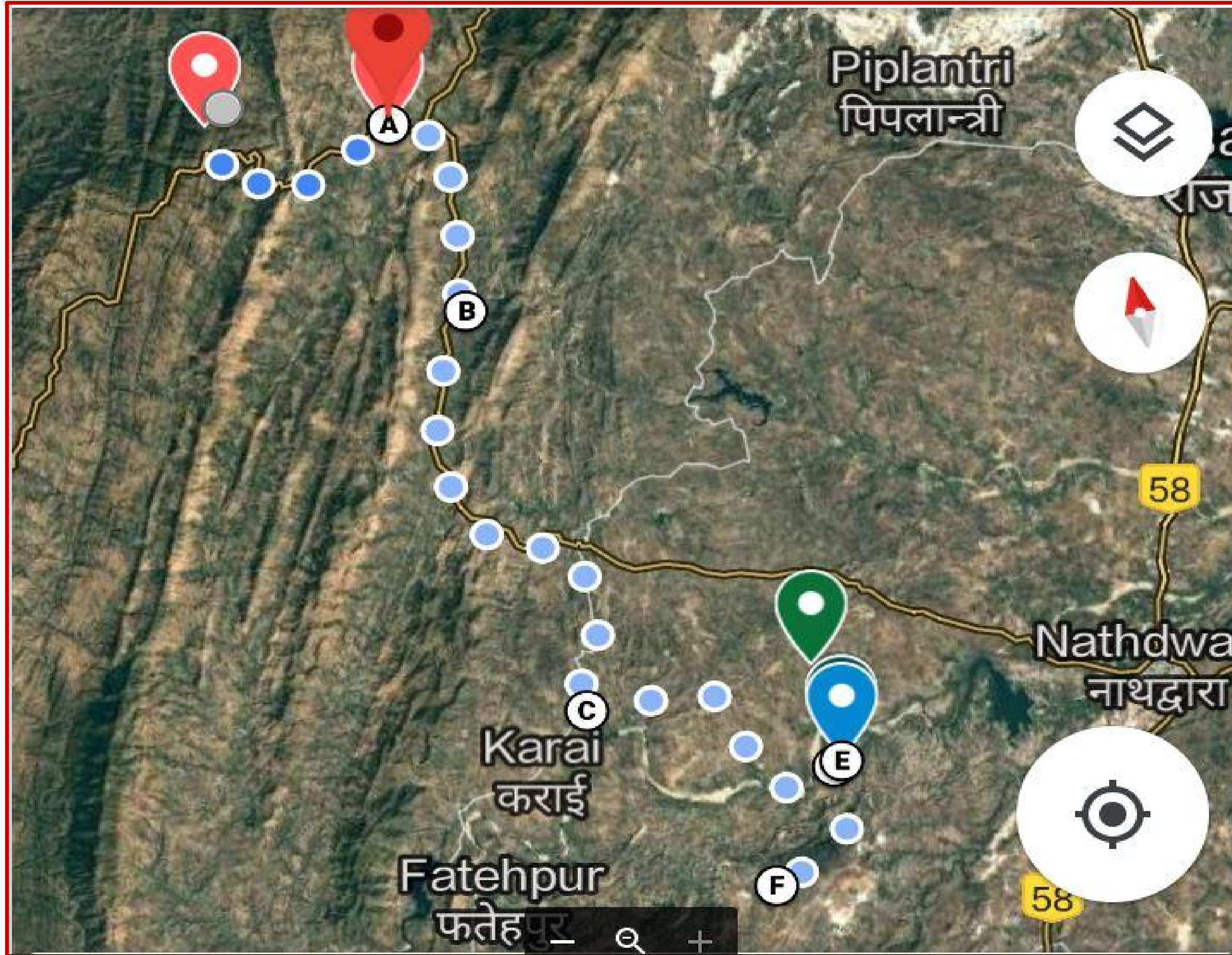
मेवाड़ की मुख्य सेना गोगुन्दा किले से कुम्भलगढ़ को निकली

- गोगुन्दा किले में कुछ ही सैनिक बचे थे।
- सभी - राजा प्रताप और उनके अन्य सरदारों के परिवार, युद्ध साहित्य, हाथी, घोड़े, ऊंट और खच्चर आदि।
- सभी को कुम्भलगढ़ जाने का आदेश दिया गया।
- कुम्भलगढ़ ऐसा किला था जिसे जीतना असंभव था।



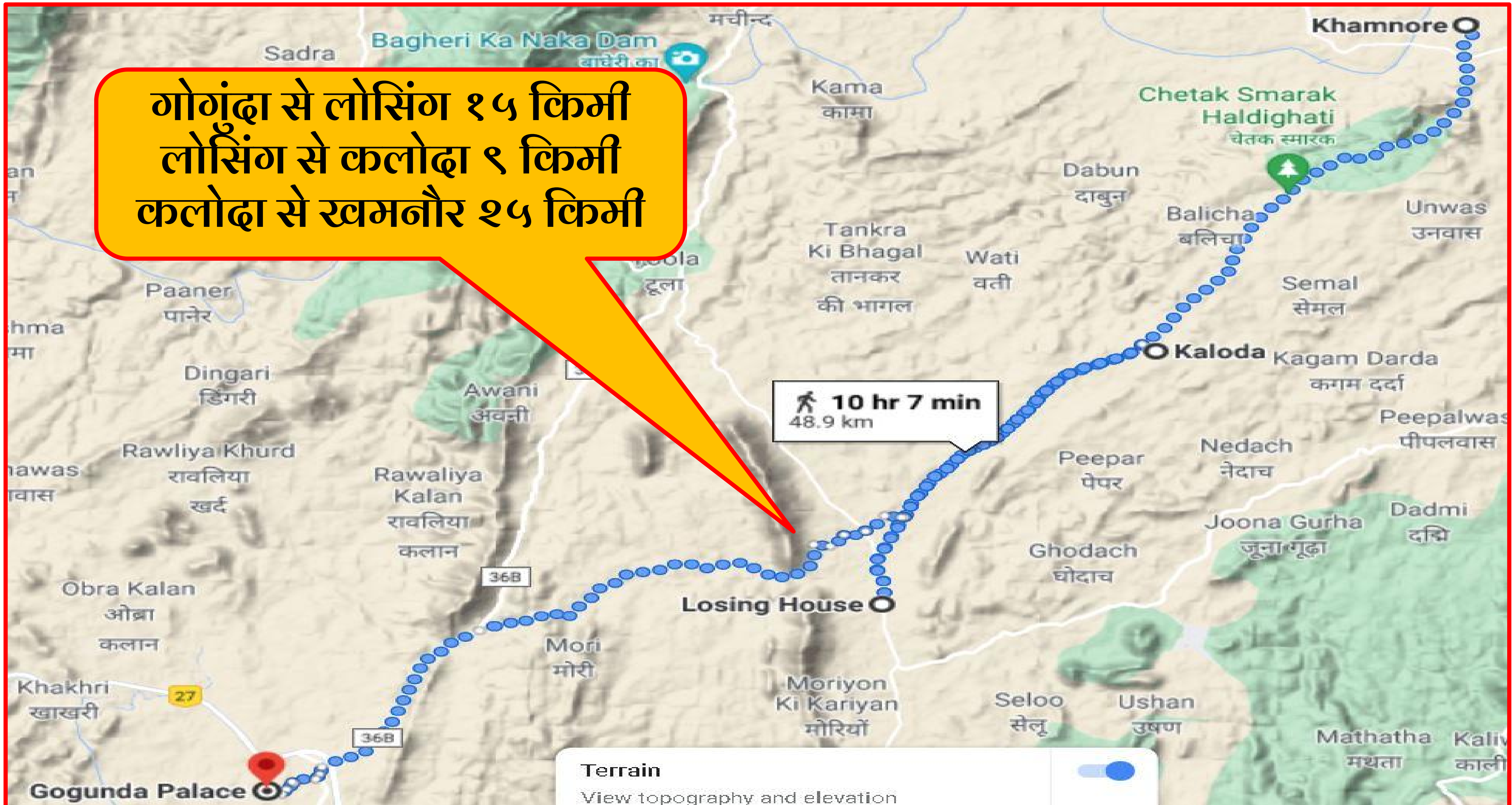
कुम्भलगढ़ किले के पास मेवाड़ के अन्य सरदारों के सैनिकों का संघटन हुआ

मार्गदर्शिका



- कुम्भलगढ़ से खमनोर किमी
- A – मझेड़ा ८
- B – मोरछा ८
- C –कोशिवरा २०
- D – मालिदा ४
- E – खमनोर गांव ७
- F – रणभूमि ३
- कुल = ५०

मेवाड़ सैन्य की जमावट



महाराणा प्रताप की उर्वरित सेना का प्रस्थान - गोगुन्दा से - लोसिंग - खमनौर - ४९ किमी



हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना के अग्रभाग में लड़ने वाले प्रमुख योद्धा।

Central Office The Palace, Udaipur

भाग १ में वर्णित घटनाओं की समीक्षा

- अब तक हमने देखा कि कैसे मुगल सेना तैयार थी। उन्होंने जून १५७६ की शुरुआत में बनास नदी के तट पर मोलेला पहाड़ी पर डेरा डाला था।
- वहां से दूर पहाड़ों को देखकर मेवाड़ की सेना के संचलन पर नजर रखी जा सकती थी।
- आसपास की पहाड़ियों में छिपने और हमला करने की सुविधा थी।
- तोपखाने नदी के किनारे तैनात किया जा सकते थे।
- बरसात की गर्मी में पसीने से लथपथ सैनिक युद्ध शुरू होने की राह देख रहे थे।

भाग १ समाप्त